दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-II (प्रश्नपत्र-1)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–**HL2**

Name: Ravi Kumar Sihag **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** Awake-19|B001

Center & Date: Delhi 03/08/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 1111762

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS and printed both in HINDI & ENGLISH.
Candidate has to attempt FIVE questions in all.
Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE from each section.
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रामस्वरूप चतुर्वेदी के साहित्येतिहास-लेखन की विशेषताएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन में आचार्य शुक्ल एवं आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के पश्चात् साहित्य लेखन में डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी द्वारा रचित पुस्तक "हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास" एक सशक्त रचना है जहाँ उपर्युक्त दोनों आचार्यद्वय का सृजनात्मक संश्लेषण किया गया है।

प्रमुख विशेषताएँ

(i) अपनी पुस्तक में मूलतः ~~शुक्ल~~ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी की विधेयवादी दृष्टि रखते हुए 'इतिहास' शब्द के बजाय 'संवेदना का विकास' शब्दों का प्रयोग करना आचार्य द्विवेदी के परंपरा तत्व का परिचायक है।

(ii) कबीर व अन्य भक्ति संतों का विश्लेषण हो या भक्ति आंदोलन के उद्भव के कारण- हर जगह इन्होंने अपनी समन्वय भावना का परिचय दिया है।

(iii) काव्य और भाषा के संबंधों पर विचार करते हुए गद्य व पद्य की भाषा में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अंतर का स्पष्ट किया है। उदाहरण के लिये गद्य में चिंतन के कारण तत्समता आदि है तो पद्य में भावनाओं के कारण तद्भवता।

(iv) रीतिकाल में बिहारी के दोहों की तुलना मिर्जा गालिब की शायरी से कर मुक्तकों व भाषा के संबंध को विश्लेषित किया।

(v) साहित्य व ललित कलाओं के संबंधों को उजागर किया।

(vi) भारतीय संस्कृति के अन्तर्विरोधों में निहित समन्वयात्मकता का संबंध स्पष्ट किया।

(vii) दो संस्कृतियों की टकराहट से उत्पन्न रचनात्मक ऊर्जा रूपी 'नवजागरण' इनके इतिहास का सबसे मार्मिक प्रसंग है।

इस प्रकार चतुर्वेदी जी ने तुलसीदास जैसी समन्वय चेतना के साथ अपनी रचना में ऐसे सृजनात्मक प्रयोग किये हैं कि विद्रोह तत्व व परंपरा तत्व विरोधी प्रतीत नहीं होते - हाथ मिलाकर चलने लगते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) इप्टा का परिचय और महत्त्व

इप्टा यानि ~~इंडियान~~ 'इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन' का उद्‌भव द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान फासीवादी खतरे की पृष्ठभूमि में 1944 ईस्वी में हुआ। इसके नाम पर रोमा रोलां की पुस्तक 'पीपुल्स थियेटर' का प्रभाव नज़र आता है।

अपने उद्‌भव के साथ ही इप्टा ने प्रगतिशीलता को धारण कर लिया था। अपने वामपंथी लेखकों द्वारा जुड़ाव के कारण ~~इसमें~~ इप्टा अपने नाटकों की विषयवस्तु व प्रदर्शन के स्तर पर प्रगतिशीलता को धारण करता था। तत्कालिक लेखक जैसे- रामविलास शर्मा, उपेन्द्रनाथ अश्क, रांगेय राघव आदि इप्टा की गतिविधियों से जुड़े व इसके विकास में योगदान दिया।

मूलतः निम्न वर्गों की दशा सुधारने वाले नाटकों के प्रदर्शन द्वारा इप्टा ने देश के कोने-कोने में अपनी पहचान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

बनाई। 'बलराज साहनी' इसके उम्दा अभिनेता थे। नाटकों के स्तर पर इप्टा द्वारा भारतेन्दु व प्रसाद के नाटकों का भी मंचन किया गया।

इस प्रकार पारसी थियेटर की तरह गतिशील व भ्रमणशील थियेटर होने के बावजूद अपने मिज़ाज में भिन्नता रखते हुए इस थियेटर एसो-सिएशन ने तात्कालिक समय में नाटकों के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) घनानंद की काव्य-भाषा

रीतिकाल की प्रमुख विशेषताओं में चर्चा करने पर सबसे प्रमुख विशेषता इसकी भाषा व इसके सृजनात्मक प्रयोग करने की कला ही नज़र आती है। अन्य कवियों से तुलना करने पर घनानंद इसमें सबसे शक्तिशाली नज़र आते हैं।

विशेषताएँ

(i) शुद्ध ब्रजभाषा के प्रयोग के कारण इन्हें 'ब्रज प्रवीन' या 'भाषा प्रवीन' भी कहा जाता है। जहाँ अन्य रीतिकालीन कवियों ने भाषा में तोड़-मरोड़ की है वहीं घनानंद ऐसा करने से बचे हैं। शुक्ल जी ने कहा है- "इनकी सी विशुद्ध, सरस और शक्तिशाली ब्रजभाषा लिखने वाला कवि दूसरा नहीं हुआ।"

(ii) भाषा में लोकतत्व की उपस्थिति नज़र आती है जो कि मुहावरों व कहावतों के प्रयोग के कारण और अधिक सुंदर नज़र आती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(iii) भाषा में अलंकारों का प्रयोग तो हुआ है किन्तु वह भी चमत्कृत करने के उद्देश्य से नहीं बल्कि भावनाओं की तीव्रता को प्रदर्शित करने के लिये जैसे –

"उजरनि बसी है, हमारी अँखियानी देखो।"
(विरोधाभास)

"तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला,
मन लेहु पर देहु छटाक नाहिं"
(श्लेष)

(iv) अन्ततः घनानंद का दृष्टिकोण भी ऐसा था कि वे कविता को साध्य मानते थे। अतः चमत्कृत करने या वक्रता लाने के बजाय अपनी 'प्रेम की पीर' को व्यंजित करने के लिये इन्होंने ऐसी भाषा का प्रयोग किया कि वे रीतिकाल में सबसे महान नज़र आते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कृपया इस संख्या के न लिखें।

(Please anything question this spac

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मनोवैज्ञानिक कहानी

मनोवैज्ञानिक कहानी पर यदि चर्चा करें तो इसका अर्थ यह बैठता है कि जो कहानी व्यक्ति के मन के विभिन्न पक्षों की तहों को उघाडे. व उसके चेतन - अवचेतन - अचेतन मन की ग्रन्थियों को सृजनात्मकता पूर्वक पाठक के पास पहुँचा दे।

मनोविज्ञान का प्रयोग कहानी में दो प्रकारों से हुआ है। पहले प्रकार में प्रेमचन्द प्रसाद जैसे रचनाकार आते हैं जिनकी कहानियों में मनोविज्ञान के तत्व तो आते हैं किन्तु वे लेखक के अनुभव एवं जीवन दृष्टि द्वारा उत्पादित हैं न कि मनोविज्ञान की अकादमिक पुस्तकों से। उदाहरण के लिये -

दलित मनोविज्ञान - सद्‌गति कहानी
नारी मनोविज्ञान - पुरस्कार (प्रसाद) कहानी

किन्तु मनोविज्ञान का दूसरा स्तर वहाँ दिखता है जो 'फ्रॉयड' के 'मनोविश्लेषणवाद' द्वारा प्रभावित है अर्थात. ये कहानियाँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

व्यक्ति के अन्तर्मन, चेतन - अवचेतन का गहरा मनन करती हैं। इन पर कार्ल युंग व थॉमस एडलर का भी प्रभाव नज़र आता है। इस धारा के प्रमुख कहानीकार व उनकी कहानियाँ हैं-

जैनेन्द्र कुमार- पाजेब, खेल, पत्नी आदि

अज्ञेय - रोज/गैंग्रीन, परंपरा, जयदोल, पठार का धीरज आदि।

विशेषताएँ

(i) कथानक का अन्तर्मुखी हो जाना।

(ii) घटनाओं का वर्णन कम होना व व्यक्ति के अन्तर्मन का वर्णन अधिक।

(iii) प्रतीकों की अधिकता।

(iv) सशक्त नारी पात्र

(v) चिंतन, मनन, विश्लेषण पर अधिक बल न कि स्थितियों के वर्णन पर।

इस प्रकार मनोवैज्ञानिक कहानीधारा ने अपने विशिष्ट उपादानों द्वारा हिन्दी कहानी परंपरा को सशक्त किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की सीमाओं का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थ
कुछ न लिखें।

(Please don't
anything in th

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) प्रेमचन्द की कहानियों के रचना-शिल्प पर प्रकाश डालिये। 20

प्रेमचन्द उस दौर के रचनाकार हैं जब हिन्दी की कहानीधारा शैशवावस्था में थी किन्तु प्रेमचन्द ने अपनी लेखनी द्वारा एक झटके में इस धारा को वयस्कता के बिन्दु पर पहुंचा दिया। न केवल संवेदना के धरातल पर बल्कि शिल्प की भूमि पर भी प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी की 'कर्मभूमि' ही नहीं बदली बल्कि उसका 'कायाकल्प' कर दिया।

प्रेमचन्द की कहानियों का रचना शिल्प

① भाषा-शैली :- प्रेमचन्द ने हिन्दी में प्रमुखतः हिन्दुस्तानी शैली का प्रयोग करते हुए लोकभाषा व काव्यभाषा के मध्य द्वैत को समाप्त कर दिया। इनकी भाषा विषयवस्तु व पात्रों के अनुरूप नये रूपाकार ग्रहण करती है। इसके साथ-साथ प्रेमचन्द ने भाषा में मुहावरों, उपमाओं व हास्य व्यंग्य का भरपूर प्रयोग कर कहानी को जीवंत, रोचक व

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आत्मीय बनाया। जैसे-

उपमाओं का प्रयोग
- "उसका रोना भी निराला था जैसे छोटी लाइन के इंजन की आवाज" (दूध का दाम)

मुहावरों का प्रयोग
- हुक्का को किसी प्रेमी के हृदय की भाँति जलता ही रहता है। (शतरंज के खिलाड़ी)

व्यंग्य का प्रयोग
- वे दोनो महात्मा दौड़ते हुए ऐसे लग रहे थे मानों चिड़ियाघर से गैंडे भाग रहे हों (निमंत्रण)

इसके साथ-साथ प्रेमचन्द ने पात्रों की वर्गीय स्थिति के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है जैसे-'शतरंज के खिलाड़ी' में फारसीमूलक बोली; 'रानी सारन्धा' में तत्समता का प्रभाव आदि।

(२) संवाद व कथोपकथन : प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में छोटे चुस्त व गतिशील संवादों का प्रयोग किया है जो कथानक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को गतिशील बनाते हैं। उदा०
"पंडिताइन - इन डायनों ने तो खोपड़ी चाट डाली है।
पंडित - रोने दो चुड़ैलों को कब तक रोयेंगी" (सद्गति)

③ कथानक योजना :- मूलतः प्रेमचन्द ने एक सरल कथानक योजना रखी है जो कि आदि - मध्य - अंत में विभाजित रहता है किन्तु कई कहानियों में प्रेमचन्द ने प्रयोगशीलता का परिचय दिया है जैसे -
'अलग्योझा' - जटिल कथानक।
'कफन' - कथानक का टूटना।
'गिला' - अन्तर्मुखी कथानक।

④ लेखक की भूमिका :- प्रेमचन्द कलावादी रचनाकार नहीं है। वे शिल्प के प्रति बहुत अधिक आग्रहशील भी नहीं है। कहानी में वर्णन करते समय भी वे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

'किस्सागो शैली' का प्रयोग बहुतायत में करते हैं ताकि रोचकता बनी रहे। हालांकि कई बार इस शैली से पाठक व कथा के मध्य दूरियाँ भी बढ़ जाती है। इसके -साथ -साथ प्रेमचन्द ने 'परिदृश्यात्मक' व 'दृश्यात्मक' दोनों शैलियों का प्रयोग वर्णन हेतु किया है।

इस प्रकार अपने शैल्पिक कौशल से कहानी के विकास में जो कार्य प्रेमचन्द ने किया, उसके चलते हम व 'हिन्दी साहित्य' हमेशा रहेंगे।

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) नंददास की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भक्तिकाल की सगुण भक्ति काव्यधारा में कृष्णभक्तों में सूरदास के बाद यदि किसी कवि का नाम आता है तो वह नंददास ही है। अष्टछाप के प्रमुख ~~भक्तों~~ भक्त होने के नाते इन्होंने कृष्ण-भक्ति के साथ-साथ काव्य कर्म भी किया। इनके प्रमुख ग्रन्थों में रस मंजरी, रास पंचाध्यायी, भँवरगीत, पदावली आदि प्रमुख है।

प्रमुख काव्यगत विशेषताएँ

(क) नंददास प्रमुखतः मुक्तकों में रचना करते हैं। कृष्णभक्त होने के कारण भक्ति के स्वरूप के कारण मुक्तकों में ही रचना करना बाध्य रहा है। इसके अलावा भँवरगीत जैसे ग्रन्थ में कृष्णकथा होने के कारण एक क्षीण प्रबंधात्मकता भी आ गई है।

(ख) भाषा-शैली के स्तर पर नंददास

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का काव्य-सौष्ठव ज़बरदस्त है। कोमल ब्रज-भाषा में रचना करना नंददास का कर्म रहा है। ब्रज-भाषा में काव्यशास्त्रीय उपादानों का सुंदर प्रयोग नंददास ने अपने काव्यों में किया है। इसी कारण कहा जाता है-

"और कवि गड़िया
नंददास जड़िया"

इनके प्रमुख ग्रन्थ भँवरगीत में भी वक्रता व प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग करते हुए इन्होंने गोपियों के द्वारा बौद्धिक प्रश्न करवाए हैं, जैसे -

"जो उनके गुन नाहिं और गुन भये कहाँ ते
बीज बिना तरू जमे मोहि तुम कहो कहाँ ते।"

(ग) शब्दावली के स्तर पर मुख्यतः ब्रज भाषा का प्रयोग करते हुए जिस प्रकार तुलसी ने 'संस्कृत का अवधीकरण' किया

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भा उसी प्रकार नंददास ने संस्कृत का 'ब्रजभाषाकरण' किया है। साथ ही काव्य के शोभाकारक गुणों यथा अलंकार (मुख्यत: अर्थालंकार), बिम्ब, प्रतीकों का समुचित प्रयोग किया है, जिनके कारण नंददास के काव्य में माधुर्य व प्रसाद गुण दृष्टिगोचर होता है जैसे -

"जो यह लीला अचल चित्त दै सुनै सुनावै
परम भक्ति सो पावै अरु सबके जिय भावै।"

इस प्रकार सूरदास के बाद नंददास ही हैं जिन्होंने अपने काव्यात्मक कौशल से ब्रजभाषा के साथ-साथ हिन्दी साहित्य की समृद्धि में योगदान दिया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जैनेन्द्र कुमार के औपन्यासिक-शिल्प पर विचार कीजिये। 15

हिन्दी के ~~मनोविश्लेषण~~ मनोविश्लेषणवादी उपन्यास धारा के सबसे सशक्त हस्ताक्षर के रूप में "जैनेन्द्र कुमार" का नाम आता है। न केवल विषयवस्तु के स्तर पर, बल्कि रूपगत स्तर पर भी जैनेन्द्र का योगदान अविस्मरणीय है। इनके प्रमुख उपन्यास परख, सुनीता, कल्याणी, त्यागपत्र, सुखदा आदि हैं।

शिल्प पक्ष

कथानक योजना :- कथानक के स्तर पर जैनेन्द्र ने मनोविश्लेषणवादी परंपरा के अनुरूप कथानक को अन्तर्मुखी बनाया। इसके साथ-साथ उन्होंने घटनाओं के वर्णन को कम करते हुए चिंतन-मनन-विश्लेषण पर प्रमुख बल देते हुए पात्रों की स्थितियों व उनके मन के विभिन्न पक्षों को उभारने पर प्रमुख

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बलदिया है। साथ ही व्यंगपत्र जैसे उपन्यास में अंतकथा को प्रारंभ से शुरू करने के कुछ नये प्रयोग भी जैनेन्द्र ने किये हैं।

संवाद योजना - ढीले, चुस्त व तीव्र संवादों के साथ जैनेन्द्र के कथोपकथन कथानक को गति-प्रदान करते हैं। उनकी प्रमुख विशेषता है कि वे तर्कों, प्रश्नों, निज-मत प्रकाशन द्वारा संवादों को सिद्ध-पोषित करते नज़र आते हैं जैसे -

"विवाह की डोरी दो की के बीच की नहीं है। वह समाज के बीच की भी है। यह केवल व्यक्ति का प्रश्न नहीं व्यवस्था का प्रश्न भी है। क्या यह प्रश्न यों टाले टल सकता है।"

भाषा शैली - भाषा के स्तर पर जैनेन्द्र ने शब्दावली के स्तर पर अनेक प्रयोग किये हैं किन्तु इसी कारण इनके व्याकरण में कुछ दुरूहता आ गया है किन्तु

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

जैनेन्द्र 'सोचा हुआ नहीं' बल्कि सोचते हुए लिखते हैं। साथ ही उनके शाब्दिक प्रयोग भी शब्दों में उचित अर्थ-भंगिमा भर देने की इच्छा भर प्रतीत होते हैं।

भाषा के स्तर पर पात्रों की वर्गीय स्थिति का ध्यान रखते हुए इन्होंने विभिन्न भाषाओं से शब्द ग्रहण किये हैं जैसे- 'अनन्वय' की नायिका अंग्रेजी बोलती है।

पात्र - पात्र योजना के स्तर पर जैनेन्द्र का बड़ा योगदान स्त्री पात्रों को प्रमुखता देना है। वे चाहे व्यथा में हो या प्रसन्नता में - उपन्यास के केन्द्र में है व हर प्रकार से पुरुष पात्रों पर भारी पड़ते हैं।

इस प्रकार अपने शिल्प पक्ष, अर्थात भाषा, कथानक योजना द्वारा जैनेन्द्र ने उपन्यास-कला को नई दिशा व दशा प्रदान की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यासों पर यदि विचार करें तो इनमें तीन प्रकार की विशेषता युक्त उपन्यास आते हैं। चूँकि इस समय में उपन्यास कला जन्य ही ले रही थी तो इस समय उपन्यासों के स्त्री तत्व इन उपन्यासों में मिलते भी नहीं हैं।

(क) ऐयारी व तिलिस्म प्रधान उपन्यास - तिलिस्म शब्द यूनानी शब्द 'टेलेस्मा' से बना है जिसका अर्थ है जादुई या इन्द्रजाल। इसके साथ-साथ ऐयारी, शब्द अरबी भाषा निर्मित है जिसका अर्थ है - 'हरफनमौला व्यक्ति'। इस प्रकार के उपन्यासों में नाटकीयता के तत्वों से भरपूर विषयवस्तु के साथ-साथ अप्राकृतिक तत्वों व शक्तियों युक्त नायक होते थे जो अन्ततः विजयी होते

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

थे। इस धारा में एक अन्य विशेषता 'जासूसी उपन्यासों' की भी थी जो अपनी रोचक व रोमांचक तत्वों की खेलमहेल के कारण प्रसिद्ध थे -

उदाहरण -

देवकीनंदन खत्री - 'चंद्रकांता', 'चंद्रकांता संतति'
किशोरीदास गोस्वामी - 'तिलस्मि महल'
गोपालराम गहमरी - 'सरकटी लाश'

(ख) नैतिक या उपदेशात्मक उपन्यास - इन उपन्यासों पर नवजागरण चेतना का प्रभाव था व ये उपन्यास आदर्शवादी कलेवर से युक्त सुखांत अंत रखते हुए उपदेश देने की प्रवृत्ति से युक्त थे। इनमें अंत में पाठक को नैतिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। उदाहरण -

लाला श्रीनिवासदास - 'परीक्षागुरु'

अन्य उपन्यास - 'आग्यवती', वामाशिक्षक, 'देवरानी - जेठानी की कहानी' आदि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) । ऐतिहासिक - पौराणिक उपन्यास :- इन प्रकार के उपन्यासों में पौराणिक या इतिहास की पृष्ठभूमि ली जाती थी किन्तु इनका उद्देश्य एक तो रोमांच के चित्र खींचना था दूसरा नवजागरण की शिक्षा देना। इतिहास -दृष्टि में भी परिपक्वता का अभाव यहाँ दिखाई देता है जैसे -

तारा, रजिया व ~~वीरमणि~~ वीरमणि जैसे उपन्यास।

(घ) इसके अलावा एक धारा ऐसी भी थी जिसका प्रमुख प्रभाव प्रेमचन्द की उपन्यासों पर पड़ा नज़र आता है। इस धारा में समाजिक यथार्थ के कुछ बीज नज़र आते हैं जैसे -

भुवनेश्वर प्रसाद - 'बलवंत भूमिहार', 'घराऊ घटना'।

व्रजनन्दन सहाय - 'सौन्दर्योपासक'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मेहता लज्जाराम शर्मा - 'धूर्त रसिक लाल'

इस प्रकार प्रेमचन्द पूर्व की उपन्यास - धारा का प्रमुख महत्व उपन्यास कला की शुरुआत करने के कारण है। इसी काल के उपन्यासों को आगे चलकर प्रेमचन्द ने अपनी कलम द्वारा परिपक्व किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी सूफीकाव्यपरंपरा में 'मधुमालती' के वैशिष्ट्य का निरूपण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिन्दी की निर्गुण भक्तिधारा में संतों के काव्यों के अलावा सूफी काव्यधारा का प्रमुख स्थान है। इस काव्यधारा में हिन्दु मिथकों की कथाओं को प्रस्तुत कर काव्यों की रचना की जाती थी। इस धारा को 'प्रेमाख्यानक धारा' के नाम से भी जाना जाता है। इसके प्रमुख रचनाकारों में मलिक मोहम्मद जायसी, मुल्ला दाऊद, मंझन, कुतुबन आदि प्रमुख है।

इसी काव्यधारा में 16 वीं शताब्दी में 'मंझन' द्वारा रचित 'मधुमालती' एक प्रमुख स्थान रखती है। मंझन द्वारा अपने सूफी आदर्शों अर्थात 'इश्कमज़ाज़ी' से 'इश्कहक़ीक़ी' तक जाने की 'तसव्वुफ' प्रक्रिया के प्रतिपादन के लिये इसकी रचना की है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अन्य सूफी रचनाओं के विपरीत इस रचना में नायक स्वयं के द्वारा उपहृता बहन से प्रेम का संबंध स्थापित करता है एवं उसे मुख्य का दर्जा देता है।

रचना में प्रेम के मूल्य को सभी मूल्यों व सर्वश्रेष्ठ माना है एवं उसे सृष्टि के निर्माण से पहले का मूल्य साबित किया गया है। जिस प्रकार जायसी ने 'मानुस प्रेम भएउ बैकुण्ठी' द्वारा प्रेम की महत्ता स्थापित की गई थी। वैसी महत्ता ही यहाँ दिखाई देती है जैसे -

"प्रथमहि आदि प्रेम प्रविस्टी
ते पाछे भई सकल सिरिस्टी"

अपनी संपूर्ण रचना में मंझन ने अपने आस-पास के वातावरण, प्रकृति, त्यौहार आदि का विस्तृत चित्रण किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी कारण यह काव्य अपने समय का 'सामाजिक ज्ञानकोश' प्रतीत होता है।

मुख्यतः अवधी के ठेठपन के साथ-साथ कई जगह मांसलता को धारणा को करते हुए भी यह काव्य अपनी भाषा व अन्य शिल्प पक्षों के कारण अत्यन्त सुंदर बन पड़ा है जिसमें चित्रात्मकता, भाषा की मधुरता के साथ जीवंत लोक प्रकृति के दर्शन होते हैं साथ ही. प्रेम का संयोग व वियोग पक्ष तो दर्शनीय है ही -

"नैन विरह अंजन जिन सारा
प्रेम विरह दरपन संसारा"

इस प्रकार मधुमालती अपने वस्तुगत व काव्यगत वैशिष्ट्य के कारण सूफी काव्यधारा में प्रमुख स्थान रखती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पारसी रंगमंच की विशिष्टताओं का निरूपण कीजिये। 15

पारसी रंगमंच 18 वीं व 19 वीं शताब्दी में शुरू हुआ एक व्यावसायिक रंगमंच था जिसने हिन्दी नाटक परंपरा के विकास में प्रमुख भूमिका निभाई। 1753 में कलकत्ता के नाल बाजार में नाच कंपनी के बाद 1850 के बाद मुंबई की अनेक नाटक कंपनियों से प्रभावित होकर वहाँ के पारसियों ने शुद्ध व्यावसायिक रूप से थियेटर कंपनी की स्थापना की। इन्हें ही पारसी रंगमंच कहा जाता है। इनके नाटककारों में नारायण प्रसाद 'बेताब', तुलसीदत्त शैदा, प्राणचंद चौहान आदि प्रमुख हैं।

विशेषताएँ

(i) हिन्दु मिथकों, पुराणों आदि कहानियों से नाटकों का निर्माण करना।

उदा० – रामायण, वीर-अभिमन्यु,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खूबसूरत बला, यहूदी की लड़की।

(ii) रोमांचकारी, उत्तेजक व तड़क भड़क पूर्ण रचना विधान के कारण ये नाटक दर्शकों को अत्यन्त आकर्षित करते थे।

(iii) अलौकिक दृश्यों की योजना पर अनेक रुपये खर्च किये जाते थे जैसे- मंच पर जंगली जानवरों का आना।

(iv) गीत - संगीत की बहुलता का होना।

(v) पर्दे पर आधारित विधान जिसमें दो पर्दों का प्रयोग किया जाता था।

(vi) भाषा के स्तर पर समन्वित व चलती हुई भाषा का प्रयोग किया जाता था। यह भाषा आम-जन की बोली के नजदीक थी।

(vii) रंगीन व रोचक वेशभूषा होने के कारण ये नाटक पात्रों के स्तर पर दर्शकों को आकर्षित करते थे।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(viii) इन नाटकों में दृश्य योजना पर अत्यधिक खर्च होता था जिसमें शेक्सपीयर आदि के नाटकों का भी प्रभाव देखा जा सकता है।

इस प्रकार पारसी रंगमंच ने अपनी विशेषताओं द्वारा नाटक जैसी विधा में दर्शकों की रूचि पैदा की व नाटक विधा के विकास में प्रमुख योगदान दिया।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।
(Please don't wr
anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा में अंतर

संतकाव्यधारा व सूफीकाव्यधारा-दोनों धाराएँ भक्तिकाल की निर्गुण भक्ति परंपरा से संबंधित हैं जिसमें लोक समन्वित दृष्टि-कोण, रहस्यवाद जैसी समानताओं के बावजूद अनेक अंतर विद्यमान हैं जो निम्न हैं।

संतकाव्यधारा	सूफीकाव्यधारा
① अनिश्चित दार्शनिक आधार का होना।	① निश्चित दार्शनिक आधार (सूफी दर्शन)
② संसार व जगत का विरोध करने की दृष्टि	- सांसारिक प्रेम के द्वारा परम तत्व को प्राप्त करने की भावना
③ साधनात्मक रहस्यवाद अंत में कहीं-कहीं भावनात्मक रहस्यवाद	- भावनात्मक रहस्यवाद की प्रधानता।
④ अन्तर्मुखी रहस्यवाद	- बहिर्मुखी रहस्यवाद

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

⑤ धार्मिक आडंबरों का विरोध व फटकार	- समन्वय भावना व गंगा-जमुनी तहजीब का निर्माण।

शिल्पगत विशेषता

- मुख्यत: मुक्तक में रचना।	- मुख्यत: प्रबंध-काव्य
- भाषा- सधुक्कड़ी या पंचमेल खिचड़ी	- अवधी भाषा
- भारतीय शैली	- मसनवी का कुछ प्रभाव
- काव्यशास्त्रीय उपादानों के प्रति उदासीन	- सुंदर प्रयोग (बिंब, अलंकार) आदि।
प्रमुख कवि- कबीर, गुरुनानक, रैदास दादू दयाल आदि	प्रमुख कवि - जायसी, कुतुबन, मंझन आदि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) हिन्दी का प्रगतिवादी उपन्यास

प्रेमचंदोत्तर उपन्यास धारा में प्रगतिवादी उपन्यास धारा अपना प्रमुख स्थान रखती है। यह धारा मार्क्स के सिद्धान्तों में विश्वास रखते हुए उपन्यास को 'क्रान्ति के हथियार' के रूप में चित्रित करती है। इस धारा के प्रमुख उपन्यासकार व उनके उपन्यास निम्न हैं -

यशपाल - दादा कॉमरेड, पार्टी कॉमरेड, झूठा सच, दिव्या, क्यों फंसे।

नागार्जुन - 'बलचनामा', बाबा बटेसरनाथ'।

रांघेय राघव - 'घरौंदा'।

प्रमुख विशेषताएँ

(i) आभिजात्य नायक की अवधारणा को ध्वस्त करते हुए निम्न वर्गों - मजदूर, किसान आदि को नायक का दर्जा देना।

(ii) उपन्यास में निम्न वर्गों में प्रगतिशील चेतना को प्रवाहित कर वर्ग संघर्ष के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

उपकरण के रूप में मानकर रचनाकर्म करना।

(iii) जनसामान्य से जुड़ी हुई सरल भाषा का प्रयोग।

(iv) उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य निम्न वर्गों को जागृत कर तनाव की उत्पत्ति करना है।

(v) उपन्यास की भाषा को कठिन व क्लिष्ट बनाने वाले प्रतीकों आदि का निषेध।

(vi) रचना में आर्थिक विषमता को चित्रित कर जन क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त करना।

इस प्रकार उपर्युक्त विशेषताओं के कारण प्रगतिवादी उपन्यास हिन्दी उपन्यास धारा में प्रमुख स्थान रखता है एवं उसे समृद्ध बनाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) प्रपद्यवाद

प्रपद्यवाद या नकेनवाद 1936 से 1938 के मध्य बिहार में शुरू हुआ एक आंदोलन है। इसे शुरूआत करने वाले रचनाकारों में नलिन विलोचन शर्मा आदि हैं, जिनके नाम पर इसे नकेनवाद भी कहा जाता है।

इस धारा के कवियों का कहना है कि अज्ञेय द्वारा शुरू किया गया 'प्रयोगवाद' वास्तविक प्रयोगवाद नहीं है। वास्तविक प्रयोगवाद तो उनका है क्योंकि उनके लिये प्रयोग करना 'साध्य' है 'साधन' नहीं। 1956 में प्रकाशित 'नकेन के प्रपद्य' नामक संग्रह से इन धारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का पता चलता है।

इन कवियों के अनुसार इन्होंने प्रयोगवाद की शुरूआत 'अज्ञेय' से पहले ही कर दी थी। इनकी कविताओं में सभी धाराओं को नकारते हुए केवल

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कवि-प्रयोग को प्रमुखता दी है। यौन-प्रसंगों की ठेलमठेल व इनकी कविताओं में विद्यमान है। सभी सत्यों को नकारते हुए उन्होंने ऐसी भाषा व ऐसी अमूर्त शब्दावली की रचना की है जो पाठक के लिये पूर्णतः अबोधगम्य है।

इस प्रकार प्रपद्यवाद का हिन्दी काव्यधारा में प्रतिष्ठित स्थान नहीं है। आगे चलकर अकहानी में जो तत्व दिखाई देते हैं, उनके बीज प्रपद्यवाद में देखे जा सकते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) निराला की कविता 'तुलसीदास' का 'प्रतिपाद्य'

हिन्दी की छायावादी काव्यधारा के पुरोधा कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' अपने जिन गुणों अर्थात- महाप्राणत्व, ओज, साहस आदि गुणों के लिये जाने जाते हैं, तुलसीदास रचना उन्हीं गुणों को दर्शाती हुई प्रतीत होती है।

कविता में निराला ने तुलसीदास की कथा को आधुनिक संबंधों में सिद्ध करने का प्रयास किया है। कविता के प्रारम्भ में - उर के शासन पर शिरस्त्राण, राज करते हुए हैं मुसलमान।" के माध्यम से उन्होंने आधुनिक जीवन के दमनकारी शासन को चित्रित किया है।

कविता में तुलसीदास का प्रारम्भ में पत्नी के प्रेम में पागल होना, उसकी पत्नी का उन्हें छोड़कर चले जाना जैसे प्रसंगों से शुरू करते हुए दूसरे खण्ड में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

जब तुलसी को प्रकृति द्वारा कर्मवाद की प्रेरणा मिलती है तो यह निराला की छायावादी चेतना द्वारा प्रस्तावित है। 'राम की शक्तिपूजा' में राम भी प्रकृति पूजन द्वारा शक्ति ग्रहण करते हैं। छायावाद में प्रकृति प्रेरणा का प्रतीक है।

प्रकृति द्वारा प्रेरणा मिलने पर भी तुलसीदास का पत्नी के घर जाना व उसकी तिरस्कारपूर्ण उक्तियों के कारण तुलसीदास के चक्षु खुलकर उनका महान कवि बनना निराला के महाप्राणत्व का परिचायक है। निराला ने अपने प्रिय कवि तुलसीदास की कहानी द्वारा साहस व ओज जैसे मूल्यों को स्थापित किया है। यही ओज उनकी आगामी कविताओं जैसे 'राम की शक्तिपूजा' में दर्शनीय है।

कृपया इस स्थ
कुछ न लिखें।
(Please don't
anything in th

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आंचलिक कहानी का परिचय

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) छायावादी कविता की 'सौंदर्य-चेतना' पर प्रकाश डालिये। 20

छायावादी कविताओं में एक विशिष्ट प्रकार की सौन्दर्य चेतना दिखाई पड़ती है जो कि इससे पूर्व के साहित्य में दुर्लभ है। छायावाद जीवन के तीन प्रमुख अंगों - सत्यम, शिवम, सुंदरम, में 'सुंदरम' को केन्द्र में रखती है और यह सौन्दर्य सत्य व शिव से युक्त हो

छायावाद में सुंदरता को जग के हर वस्तु तक विस्तारित किया गया है चाहे वह मानव हो, प्रकृति हो, नारी हो या अन्य।

"सुंदर है सुमन विहग सुंदर
मानव तुम सबसे सुंदरतम."

छायावाद के सौन्दर्य की प्रमुख विशेषता इसकी कोमलता व रहस्यात्मकता है। इस सौन्दर्य में दिखावट नहीं गूढ़ता है, गोपनीयता है —

"तुम कनक किरण के अंतराल में

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

छुप छिपकर चलते हो क्यों
है लाज भरे सौन्दर्य बता दो
मौन बने रहते हो क्यों "

छायावाद में नारी का जो सौन्दर्य है उसे ये कवि भक्ति के भाव के समान स्थापित करते हैं। यह वही प्रेम है जिसमें 'शरीरी पक्ष' अनुपस्थित है। ये केवल भावनाओं से प्रेम करते हैं जिसे 'प्लेटोनिक प्रेम' भी कहा जाता है।

" सरल भौंहों में था आकाश,
हास में शैशव का संसार।"

इसी प्रकार की सौन्दर्य चेतना प्रकृति के सन्दर्भ में है जब ये कवि प्रकृति को 'यह प्रकृति परम रमणीय अखिल ऐश्वर्य भरी' कहकर संबोधित करते हैं।

प्रकृति के सौन्दर्य में भी ये नवीनता को प्रमुखता देते हैं -

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundat

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"प्रकृति के यौवन का शृंगार
करेंगे कभी न बासी फूल
मिटेंगे वे जाकर अतिशीघ्र
आह! उत्सुक है उनकी धूल।"

प्रकृति से इनका प्रेम इतना है कि ये कवि प्रकृति को सजीव-वस्तु के रूप में चित्रित कर उसका मानवीकरण कर देते हैं। प्रकृति को मनुष्यों के समान क्रियाएँ-क्रीडाएँ करते हुए इनकी कविता में दिखाया गया है-

"मेघमय आसमान से उतर रही है
संध्या सुंदरी परी सी
धीरे, धीरे, धीरे।"

प्रकृति के संबंध में इनका प्रेम इतना अधिक है कि ये ~~कवि~~ कवि अपनी निराशा के समय में प्रकृति की गोद में जाना चाहते हैं; अपने प्रश्नों के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

जवाब भी ये प्रकृति में ही ढूँढते हैं। पंत ने तो प्रकृति की सुंदरता को नारी की सुंदरता से भी बढ़कर बताया है -

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले तेरे बाल जाल में,
कैसे उलझा दूँ लोचन।"

इस प्रकार सौन्दर्य के विभिन्न पक्ष, विभिन्न स्तर एवं सामाजिक वस्तुओं के आंतरिक सौन्दर्य को देखने के लिये जिन आँखों की ज़रूरत थी वे छायावादी कवि के पास ही थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) हिन्दी की 'नया उपन्यास' धारा पर प्रकाश डालिये। 15

'नया उपन्यास' की धारा हिन्दी उपन्यास में वास्तविक तौर पर स्थापित कोई धारा नहीं है। इस समय साहित्य की विभिन्न विधाओं में 'नवलेखन का दौर' (नयी कहानी, नयी कविता) चल रहा था तो इसी सन्दर्भ में इस युग के उपन्यासों को 'नया उपन्यास' कह दिया जाता है। इस धारा में कोई एक विषयवस्तु न होकर अनेक प्रकार के विषयों पर उपन्यास लिखे गये जो निम्न है -

① महानगरीय उपन्यास धारा :- इस धारा के उपन्यासों में शहरी जीवन (मुख्यतः मध्यवर्ग) की विभिन्न समस्याओं जैसे- ग्रामीण जनजीवन से कटाव की त्रासदी, बदलते उपयोगितावादी संबंध, नारी-पुरुष संबंधों में बदलाव, मध्यवर्ग

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

की उलझन, संत्रास, अलगाव, विसंगति-बोध का चित्रण प्रमुख है। इस पर 'अस्तित्ववादी' विचारधारा का प्रभाव प्रमुख है। इस धारा के प्रमुख उपन्यास व उपन्यासकार हैं -

मोहन राकेश - 'अंधेरे बंद कमरे'
- 'न आने वाला कल'

निर्मल वर्मा - 'वे दिन'
'एक चीथड़ा सुख'

② यौन चेतना के उपन्यास :- इन उपन्यासों में मुख्यतः यौन वर्जनाओं व यौन नैतिकताओं को तोड़ने का प्रयास किया गया है। पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' के 'चन्द हसीनों के खतूत' (1956) जिसे आलोचक घासलेटी साहित्य कहते हैं से इस धारा की शुरुआत भी मानी जाती है। उदाहरण -

राजकमल - 'मरी हुई मछली'
कृष्णा सोबती - 'सूरजमुखी अंधेरे के'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मृदुला गर्ग - चितकोबरा

(3) स्त्री विमर्श के उपन्यास :- 'संवेदना' के बजाय 'स्वयं वेदना' को महत्व देते हुए अपनी समस्याएँ खुद उठाने के लिये प्रमुख महिला रचनाकारों द्वारा इस धारा की शुरूआत की गई। इसमें समय, स्थान सापेक्ष नारी समस्याएँ उठायी गई हैं जैसे -

मन्नू भंडारी - आपका बंटी
~~मृदुला~~ कृष्णा सोबती - मित्रो मरजानी
मृदुला गर्ग - इदन्नम
प्रभा खेतान - छिन्नमस्ता कठगुलाब।

इस प्रकार 'नया उपन्यास' धारा हिन्दी उपन्यास धारा की एक सृजनात्मक उपलब्धि है जिसमें नये विषयों के समावेशन से उपन्यास-पूंजी में वृद्धि हुई है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) केशवदास के कविकर्म की मौलिकता पर विचार कीजिये। 15

रीतिकाल की रीतिबद्ध काव्यधारा के शिखर कवि 'केशवदास' को रीतिकाल के प्रवर्तक होने का गौरव प्राप्त है। हालांकि अपनी रचनाओं जैसे रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रसिकप्रिया आदि में निहित कविनाई के आरोप इन पर लगते हैं किन्तु फिर भी केशव ने अपने काव्यों में अनेक स्थानों पर मौलिक चिंतन का परिचय दिया है।

केशव की मौलिकता की सबसे अधिक प्रशंसा 'अज्ञेय' द्वारा की गई है। अज्ञेय ने इनकी 'वहुछंद प्रस्तुतिकरण' की प्रशंसा करते हुए कहा कि इनके जितना 'छंद वैविध्य' हिन्दी तो क्या अन्य किसी भाषा के साहित्य में मिल पाना मुश्किल है। साथ ही अज्ञेय ने इनके 'टेडिशन स्थापित करने (लक्षणग्रन्थ परंपरा)' के कार्य को भी महत्ता दी है।

Copyright – Drishti The Vision Fo

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दूसरे स्तर पर इनकी मौलिकता इनके अलंकार विवेचन को लेकर है। जहाँ एक ओर इन्होंने मम्मट आदि रसवादी आचार्य के बजाय भामह जैसे आचार्यों के ग्रन्थों को अपने लक्षण ग्रन्थों का आधार बनाया वहीं दूसरी ओर इनके अलंकार विवेचन में भी मौलिकता है जैसे -

(क) 'अन्योक्ति' का सर्वप्रथम उल्लेख।

(ख) उपमा व यमक के भेदों में मौलिकता।

(ग) अलंकार का प्रच्छन्न व प्रकाश में विभाजन।

तीसरे स्तर पर इनकी मौलिकता रामचन्द्रिका काव्य में है जहाँ इन्होंने लौकिक व अलौकिक विषयों दोनों को जोड़कर अन्ततः भारतीय मूल्यों की विजय दिखाई है।

चौथे स्तर पर इनकी मौलिकता रूपाभक्ति की 'नवरसमयी परिकल्पना'

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

को लेकर है जो इससे पहले कहीं नहीं मिली।

मौलिकता का सुंदर स्वरूप इनकी संवाद योजना में मिलता है जहाँ 'गागर में सागर' की ~~कहावता~~ कहावत चरितार्थ होती है। शुक्ल जी ने भी कहा है - "केशव को सबसे अधिक सफलता मिली है संवाद योजना में ××× इनका रावण अंगद संवाद तुलसी के रावण- अंगद संवाद से अधिक सुंदर है।"

उदा०

"मातु कहाँ नृपतात? गये सुरलोकहिं। क्यों? सुत शोक लये।"

इस प्रकार केशव को इन्हीं मौलिक उपादानों के कारण 'आचार्य' का पद प्राप्त है। साथ ही, हिन्दी साहित्य के रीतिकाल के प्रवर्तक तो वे हैं ही।

Copyright – Drishti The Vision Foun

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'छायावाद पलायन का काव्य है।' इस मत पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation